1 कुरिन्थियों अध्याय 12 और 13
रविवार, 10 नवम्बर 2019

अध्याय बारह

टिप्पणी: अध्याय 12-14 में दिया गया बहुत-सा विषय APC-ए.पी.सी.,की निःशुल्क प्रकाशन पुस्तक: **"पवित्र आत्मा के वरदान"** से अनुकूलित किया गया है। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस प्रकाशन को देखें।

अध्याय 11 में, प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों की सभाओं में उचित आचरण से संबंधित दो विषयों पर चर्चा की:

- सिर ढकना (अध्याय 11:1-16)
- प्रभु भोज में भाग लेना (अध्याय 11:17-34)

अब अध्याय 12-14 में, प्रेरित पौलुस आत्मिक वरदानों के प्रयोग और देह में विभिन्न कार्यों की शिक्षा और स्पष्टता प्रदान करता है, जो सभी स्थानीय कलीसिया की सभाओं के दौरान कार्य में आते हैं।

इस प्रकार, 1 कुरिन्थियों अध्याय 12 से 14, जो पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रयोग को संबोधित करते हैं, उन्हें स्थानीय कलीसिया की सभाओं के संदर्भ में आत्मिक वरदानों के उपयोग के निर्देशों के रूप में पढ़ा और समझा जाना चाहिए।

हालाँकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि पवित्र आत्मा के वरदान केवल स्थानीय कलीसिया की सभाओं में ही प्रकट हो सकते हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा सदैव उपस्थित रहते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी समय, कहीं भी, विश्वासी के द्वारा स्वयं को प्रकट कर सकते हैं।

आत्मिक वरदानों के विषय में (12:1-11)

1 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो।
2 तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजातीय थे, तो गूंगी मूर्तियों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे।
3 इसलिये मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।
4 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है;
5 और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है;
6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।
7 किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।
8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।
9 किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
10 फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यद्वाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।
11 परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।

- **वचन 1:**

हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो।

'आत्मिक' (यूनानी शब्द *न्यूमाटिकोस pneumatikos*) का अर्थ है 'शारीरिक नहीं', 'अलौकिक'। अतः यहाँ हम अलौकिक वरदानों की बात कर रहे हैं। ये वे वरदान नहीं हैं जो स्वाभाविक रूप से अर्जित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, चंगाई के वरदान किसी चिकित्सक के कौशल के समान नहीं हैं। बुद्धि के वचन का वरदान बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त करने या पीएच.डी. की डिग्री अर्जित करने जैसा नहीं है। भाषाओं का वरदान अनेक भाषाएँ सीखने और बोलने की प्राकृतिक क्षमता नहीं है। पौलुस उन अलौकिक वरदानों की बात कर रहे हैं जो हमें पवित्र आत्मा के द्वारा दिए जाते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि हम इन आत्मिक वरदानों को जानें और समझें।

- **वचन 2:**

तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजातीय थे, तो गूंगी मूर्तियों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे।

पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को उनके अतीत की याद दिलाते हैं कि वे मूर्ति-पूजा के जीवन से बाहर निकले थे। यहाँ विशेष बल 'गूँगे' (अर्थात् 'बोलने में असमर्थ') शब्द पर है। वे मूर्तियाँ बोलती नहीं थीं और न ही स्वयं को प्रकट करती थीं। इसके विपरीत, हम जीवते परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो बोलते हैं, प्रकट करते हैं, कार्य करते हैं और पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा स्वयं को व्यक्त करते हैं।

- **वचन 3:**

इसलिये मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

पवित्र आत्मा लोगों (विश्वासियों) के द्वारा स्वयं को व्यक्त करते हैं। हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा कार्य कर रहे हैं, क्योंकि जब कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा बोलता है, तो वह प्रभु की महिमा करता है, प्रभु को आशीष देता है, और यीशु मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार करता है। यह पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति को पहचानने का पहला मार्गदर्शक सिद्धांत है।

- **वचन 4:**

वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है;

'वरदान' शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ *'करिस्मा'* है, जिसका अर्थ है 'अनुग्रह का उपहार'। 'करिस' शब्द का अर्थ 'अनुग्रह' होता है।
एक ही आत्मा के द्वारा विभिन्न प्रकार के या भिन्न-भिन्न वरदान दिए जाते हैं।
पवित्र आत्मा अनुग्रह के अनेक, विविध और भिन्न वरदान प्रदान करते हैं।
पवित्र आत्मा के वरदान उनके अनुग्रह के कारण और उनके द्वारा निःशुल्क दिए जाते हैं। ये हमारे द्वारा किए गए कार्यों पर आधारित नहीं होते। हम पवित्र आत्मा के वरदानों को अर्जित / कमाते नहीं करते।

परन्तु हमें इन वरदानों के विषय में अज्ञानी नहीं रहना चाहिए, और लोगों की सेवा करने के लिए हमें यह सीखना चाहिए कि इन वरदानों का प्रयोग कैसे किया जाए।

- **वचन 5:**

और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है;

'सेवाएँ' शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ *'डियाकोनिया' 'diakonia'* है, जिसका अर्थ है 'सेवाएँ', 'पद'।
प्रभु यीशु के द्वारा अनेक, विविध और भिन्न-भिन्न सेवाएँ या वचन दिए जाते हैं।
उदाहरण: शिक्षक की सेवा (सेवा या पद), पास्टर, सेवक (डिकन), प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, मध्यस्थ प्रार्थना करने वाला, आदि।

- **वचन 6:**

और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

'प्रभावशाली कार्य' शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ *'एनर्जेमा' (energēma)* है, जिसका अर्थ है 'कार्य', 'बाहरी अभिव्यक्तियाँ', 'परिणाम'। नए नियम में यह शब्द सदैव अलौकिक कार्य के संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है। एक विश्वासी के द्वारा दैवीय सामर्थ्य की अनेक, विविध और भिन्न अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जिनके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ या बाहरी प्रकटियाँ होती हैं।

हम वचन 4 से 6 को दो तरीकों से समझ सकते हैं, और दोनों ही सही हैं: एक ही आत्मा अनुग्रह के इन सभी भिन्न वरदानों का स्रोत हैं। वही प्रभु यीशु लोगों को भिन्न-भिन्न सेवाएँ (सेवाएँ, पद) प्रदान करते हैं। वही पिता परमेश्वर लोगों के द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों (या अभिव्यक्तियों, बाहरी प्रकटियों) में कार्य करते हैं। या फिर, हम इन तीन पदों को इस प्रकार भी देख सकते हैं कि वही आत्मा विविध वरदान प्रदान करते हैं, विविध सेवाओं को सामर्थ्य देते हैं, और लोगों के द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों या कार्यों को घटित करते हैं।

वरदान, सेवाएँ, कार्यप्रणालियाँ: इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, बढ़ई, ऑटो-मैकेनिक

एक इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, बढ़ई और ऑटो-मैकेनिक पर विचार करें। ये सभी भिन्न प्रकार की व्यवस्थाएँ (सेवाएँ या सेवकाइयाँ) हैं। प्रत्येक के पास एक टूल-बॉक्स होता है जिसमें स्क्रू-ड्राइवर, हथौड़ा आदि उपकरण होते हैं। हम इस टूल-बॉक्स की तुलना उन पवित्र आत्मा के वरदानों से कर सकते हैं जिनका हम अभी अध्ययन कर रहे हैं। परन्तु वही उपकरण (जैसे स्क्रू-ड्राइवर) का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति भिन्न प्रकार से करता है। बढ़ई स्क्रू-ड्राइवर का उपयोग लकड़ी में स्क्रू लगाने के लिए करता है, इलेक्ट्रीशियन उसी स्क्रू-ड्राइवर से विद्युत भागों को कसता है, और इसी प्रकार अन्य भी। ये सभी उसी एक उपकरण के द्वारा की गई भिन्न-भिन्न कार्यप्रणालियाँ, गतिविधियाँ या दैवीय सामर्थ्य की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो विभिन्न सेवाओं के माध्यम से प्रकट होती हैं। इसी प्रकार, पवित्र आत्मा के वही वरदान मसीह की देह में विभिन्न सेवाओं के द्वारा भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रकट हो सकते हैं। परन्तु स्रोत वही एक परमेश्वर हैं, जिनकी सेवा की जा रही है, और जिनकी सामर्थ्य मसीह की देह में इन सभी सेवाओं के द्वारा प्रकट हो रही है।

- **वचन 7:**

किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

वचन 4 में जिन अनुग्रह के वरदानों की चर्चा की गई है, उन्हें आत्मा की अभिव्यक्ति भी कहा गया है, अर्थात् पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ्य का प्रकट होना। ये "प्रत्येक को" दिए जाते हैं, अर्थात् हर एक विश्वासी को, ताकि सबका लाभ हो। <u>प्रत्येक विश्वासी के द्वारा पवित्र आत्मा के वरदान (या आत्मा की अभिव्यक्तियाँ) प्रकट हो सकते हैं।</u>

- **वचन 8-10:**

8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।
9 किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
10 फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यद्वाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।

स्थानीय कलीसिया की सभा में, जब विश्वासी संगति के लिए एकत्र होते हैं, तब परमेश्वर का आत्मा वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा विभिन्न तरीकों से स्वयं को प्रकट करते हैं। यहाँ पवित्र आत्मा के नौ वरदानों की सूची दी गई है।

इन वरदानों के प्रयोग के विषय में अतिरिक्त जानकारी के लिए, कृपया APC की निःशुल्क प्रकाशन पुस्तक: "**पवित्र आत्मा के वरदान**" देखें। साथ ही, इन आत्मिक वरदानों के प्रयोग में प्रशिक्षण और तैयारी के लिए हमारी वीकेंड स्कूलों में भी भाग लें।

- **वचन 11:**

परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।

'परन्तु ये सब कार्य वही एक और वही आत्मा करता है', इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा के सभी वरदानों को वही एक पवित्र आत्मा कार्य में लाते हैं। इसलिए ये वरदान किसी विश्वासी के नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के हैं। इसका यह भी अर्थ है कि सभी नौ वरदान किसी एक विश्वासी के द्वारा भी कार्य में आ सकते हैं, क्योंकि सभी नौ वरदान पवित्र आत्मा के पास हैं, और वही इन सभी को विश्वासी के द्वारा प्रकट करते हैं।

'और अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक को अलग-अलग बाँटता है', इसका अर्थ यह है कि इन नौ वरदानों में से कोई भी (एक, एक से अधिक, या सभी) किसी भी सभा में प्रत्येक व्यक्ति, अर्थात् हर एक विश्वासी के द्वारा प्रकट हो सकते हैं। *'जैसा वह चाहता है'*, इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा इन वरदानों को अपनी इच्छा के अनुसार प्रकट करते हैं। परन्तु, जैसा कि पौलुस आगे चलकर बताता है, हमारी भी भूमिका है—हमें इन वरदानों की लालसा करनी है और यह जानना है कि इन्हें सही रीति से कैसे प्रकट किया जाए। इसलिए आत्मा की अभिव्यक्तियाँ (पवित्र आत्मा के वरदान) एक सहयोगात्मक कार्य हैं। हम पवित्र आत्मा के साथ मिलकर इन वरदानों को प्रकट करते हैं। वह इच्छा करते हैं, पर हमें भी इच्छुक

होना चाहिए, सहयोग करना चाहिए, लालसा रखनी चाहिए, विश्वास रखना चाहिए, और वरदानों को सही रीति से प्रकट करना चाहिए।

देह में कार्य (12:12-27)

1 कुरिन्थियों 12:12-27 में, पौलुस मसीह की देह में प्रत्येक विश्वासी की व्यक्तिगत भूमिका, स्थान और कार्य के विषय में चर्चा करते हैं। वह शारीरिक देह और मसीह की देह के बीच तुलना करते हैं। यह ध्यान में रखें कि स्थानीय कलीसिया मसीह की देह की भौतिक अभिव्यक्ति है।

1 कुरिन्थियों 12:12–27
**12 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब
मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।**
**13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के
लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।**
14 इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं।
15 यदि पाँव कहे, "मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं?
16 और यदि कान कहे, "मैं आँख नहीं, इसलिये देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है?
17 यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहाँ होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूँघना कहाँ होता?
18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।
19 यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहाँ होती?
20 परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।
**21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं," और न सिर पाँवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारी
आवश्यकता नहीं।"**
22 परन्तु देह के वे अंग जो दूसरों से निर्बल लगते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं;
**23 और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन
अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं,**
**24फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं। परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि
जिस अंग को आदर की घटी थी उसी को और भी बहुत आदर मिले।**
25 ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
**26 इसलिये यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है,
तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।**
27 इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो;

टिप्पणी: नीचे दिया गया खंड APC की निःशुल्क प्रकाशन पुस्तक: **"परमेश्वर का घर"** से अनुकूलित किया गया है।

A. देह के बहुत से अंग हैं (12:12,14)
हम मसीह की देह में भूमिका और कार्य के संदर्भ में भिन्न-भिन्न हैं। हम सब एक जैसे नहीं हैं।

B. हम में से प्रत्येक व्यक्ति, देह का एक अंग है (12:27)
हम में से कोई भी "अनावश्यक" नहीं है।

C. हम स्वतंत्र नहीं हैं। हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है (12:15,16)

D. देह में विभिन्न प्रकार के कार्य हैं (12:17)
हम सबका कार्य एक-सा नहीं है। आइए, हम प्रत्येक व्यक्ति के वरदान और कार्य की सराहना करना और उसका उत्सव मनाना सीखें।

E. परमेश्वर ने प्रत्येक को वहीं रखा है जहाँ उन्हें सबसे उत्तम लगा और जैसा उन्हें भाया (12:18)
आइए, हम अपने स्थान को पहचानें और जो भी भूमिका और कार्य मसीह ने हमें दिया है, उसमें आनंद करें। आइए, हम किसी और के वरदान, भूमिका और कार्य से ईर्ष्या न करें।

F. पूरे देह के बनने के लिए हम में से बहुतों की—बल्कि हम सबकी—आवश्यकता है (12:19,20)
समझें कि देह हम सबके बिना पूर्ण नहीं है। हम स्थानीय कलीसिया की देह का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। इसलिए हमें जुड़े रहना चाहिए और देह में अपना योगदान देना चाहिए।

G. हम कभी भी स्वतंत्रता का दावा नहीं कर सकते (12:21)
यह पहचानें कि अन्य लोग आपके जीवन में देने के लिए आपके चारों ओर रखे गए हैं, और आप उनके जीवन में देने के लिए उनके पास रखे गए हैं। मुझे दूसरों की आवश्यकता है, और दूसरों को मेरी आवश्यकता है।

H. जो कम आदर का प्रतीत होता है, परमेश्वर उसे अधिक आदर देते हैं (12:22-24)
जो निर्बल प्रतीत होता है, वही वास्तव में आवश्यक है और इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है। जो छिपा हुआ प्रतीत होता है, उसे वास्तव में अधिक आदर मिलता है, इसलिए उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए।

I. परमेश्वर अपनी देह में किसी प्रकार का विभाजन या झगड़ा नहीं चाहते, बल्कि यह चाहते हैं कि हम एक-दूसरे के प्रति पारस्परिक प्रेम और देखभाल प्रकट करें (12:25-26)

वरदान और कार्य

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि 1 कुरिन्थियों 12:8-11 में प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा के नौ वरदानों की सूची दी है। इस खंड, 1 कुरिन्थियों 12:12-27 में, प्रेरित पौलुस मसीह की देह में प्रत्येक विश्वासी के कार्यों (भूमिका या सेवा) के विषय में बताते हैं।

पवित्र आत्मा के वरदान, जिन्हें “अनुग्रह के वरदान” या जिन्हें हम “सदस्यता के वरदान” कहते हैं, विश्वासी को देह में अपने कार्य (भूमिका, सेवा, या सेवा-क्षेत्र) को पूरा करने में सक्षम बनाते हैं।

पवित्र आत्मा के नौ वरदान हैं, परन्तु देह में “सदस्यता के वरदान” असीमित हैं, और कार्य (भूमिका, सेवा, या सेवा-क्षेत्र) भी असीमित हैं।

1 कुरिन्थियों 12:28-30 को समझाने से पहले, आइए नए नियम में पाए जाने वाले आत्मिक वरदानों की तीन श्रेणियों को संक्षेप में समझें।

पवित्र आत्मा के वरदान, सदस्यता के वरदान और सेवकाई के वरदान

<u>पवित्र आत्मा के वरदान</u>
1 कुरिन्थियों 12:7-11
पवित्र आत्मा के सभी नौ वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं।

<u>सदस्यता के वरदान</u>
रोमियों 12:6-8, 1 कुरिन्थियों 12:12-27, इफिसियों 4:7, 1 पतरस 4:10-11
सभी विश्वासियों के पास एक या अधिक सदस्यता के वरदान होते हैं (जिन्हें अनुग्रह के वरदान भी कहा जाता है)। परन्तु देह में हमारे कार्य के अनुसार, हम सबके सदस्यता के वरदान भिन्न-भिन्न होते हैं। उदाहरण: नेतृत्व, देना, दया दिखाना, आदि।

<u>सेवकाई के वरदान</u>
इफिसियों 4:11
मसीह के वरदान, जो कुछ (विशिष्ट) व्यक्तियों को दिए जाते हैं।
ये पाँच हैं: प्रेरित, भविष्यवक्ता, पासवान, शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक।

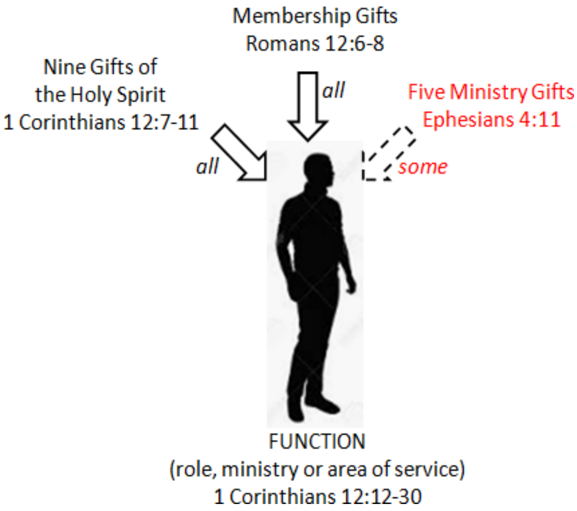

English Text	Hindi Translation
Membership Gifts	सदस्यता के वरदान
Romans 12:6–8	रोमियों 12:6–8
all	सभी
Nine Gifts of the Holy Spirit	पवित्र आत्मा के नौ वरदान
1 Corinthians 12:7–11	1 कुरिन्थियों 12:7–11
all	सभी
Five Ministry Gifts	पाँच सेवकाई के वरदान
Ephesians 4:11	इफिसियों 4:11
some	कुछ

English Text	Hindi Translation
FUNCTION	कार्य
(role, ministry or area of service)	(भूमिका, सेवकाई या सेवा का क्षेत्र)
1 Corinthians 12:12–30	1 कुरिन्थियों 12:12–30

पवित्र आत्मा के वरदान, सदस्यता के वरदान, और (यदि दिए गए हों) सेवकाई के वरदान—ये सभी मिलकर मसीह की देह में एक विश्वासी के **कार्य (FUNCTION)** को परिभाषित करते हैं और उसे पूरा करने में सहायता करते हैं।

विभिन्न सेवकाई कार्य (12:28-30)

1 कुरिन्थियों 12:28-30

28 और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रबन्ध करनेवाले, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।
29 क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम करनेवाले हैं?
30 क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?

- **वचन 28:**

'नियुक्त किए हैं' का अर्थ है—अपने उपयोग के लिए किसी को किसी स्थान पर रखना।
'इनको' (KJV में 'some' अर्थात 'कुछ को') यह दर्शाता है कि ये विशेष लोग हैं, सभी नहीं।
'पहले' (यूनानी शब्द *'प्रोटोन'* *'proton'*) का अर्थ है—समय या स्थान में पहला, या पद, प्रभाव और आदर में प्रथम।
परमेश्वर ने कुछ लोगों को इन स्थानों (भूमिकाओं या कार्यों) में रखा है, और उन्हें उनका स्थान, पद, प्रभाव और आदर प्रदान किया है।

'उपकार' उन लोगों को दर्शाता है जो किसी भी प्रकार की सहायता, सेवा या मदद प्रदान करते हैं; अर्थात् सहायक।

'प्रबंध' (KJV-किंग जेम्स वर्शन अंग्रेजी बाइबल में 'governments'-'गवर्नमेंट्स') का अर्थ है 'शासन करना' या 'मार्गदर्शन करना', और यह शब्द सामान्यतः जहाज़ को चलाने वाले व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रेरित पौलुस यहाँ सेवकाई के वरदानों (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, सामर्थ्य के काम, चंगाई के वरदान) और सदस्यता के वरदानों (उपकार, प्रबंध, नाना प्रकार की भाषाएँ) की एक सूची प्रस्तुत करता है, और इस प्रकार स्पष्ट करता है कि सभी सदस्यों के पास समान सेवकाई या समान सदस्यता के वरदान नहीं होते।

सेवकाई के वरदान (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, सामर्थ्य के काम, चंगाई के वरदान)। यहाँ 'सामर्थ्य के काम' और 'चंगाई के वरदान' सुसमाचार प्रचारक के कार्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सदस्यता के वरदान (उपकार, प्रबंध, नाना प्रकार की भाषाएँ)। 'नाना प्रकार की भाषाएँ' उन विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनकी सदस्यता की भूमिका नियमित रूप से 'नाना प्रकार की भाषाओं' के द्वारा प्रकट होती है, जैसे—मध्यस्थ प्रार्थना करने वाले, या वे जो सार्वजनिक रूप से भाषाओं में संदेश लाते हैं।

इसलिए वचन 30 और 31 में पूछे गए प्रत्येक अलंकारिक प्रश्न का उत्तर 'नहीं' है, क्योंकि पौलुस यहाँ सेवकाई के वरदानों और सदस्यता के कार्यात्मक वरदानों की बात कर रहे हैं, न कि विशेष रूप से पवित्र आत्मा के वरदानों की।

1 कुरिन्थियों 12:31
क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

पवित्र आत्मा के वरदानों और मसीह की देह में विश्वासियों के कार्य के विषय में समझ देने के बाद, पौलुस फिर से पवित्र आत्मा के वरदानों की शिक्षा की ओर लौटते हैं। हमें बड़े वरदानों की लालसा करनी है, और साथ ही प्रेम के मार्ग पर भी चलना है।

'बड़े वरदानों' को समझने का एक तरीका यह है कि सबसे उत्तम वरदान वही है जो उस अवसर पर, जिन लोगों की सेवा की जा रही है, उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए सबसे उपयुक्त हो। सामान्य रूप से—किसी व्यक्ति को यदि चंगाई की आवश्यकता हो, तो उसके लिए चंगाई के वरदान, सामर्थ्य के काम, और विश्वास सबसे उपयुक्त वरदान होंगे। इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति निराश है और किसी बीमारी से ग्रस्त नहीं है, तो उसके लिए भविष्यवाणी सबसे उपयुक्त वरदान होगी।

की धुन में रहो...
परमेश्वर चाहते हैं कि हम इन आत्मिक वरदानों की लालसा / इच्छा रखें।

<u>अध्याय तेरह</u>

और भी उत्तम मार्ग

1 कुरिन्थियों 12:31
क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

1 कुरिन्थियों 13:1-13
1 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं।

³ यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ
भी लाभ नहीं।
⁴ प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं,
⁵ वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
⁶ कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
⁷ वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता
है।
⁸ प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट
जाएगा।
⁹ क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी;
¹⁰ परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
¹¹ जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु
जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
¹² अभी हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है,
परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूँगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ।
¹³ पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

1 कुरिन्थियों 12 में पवित्र आत्मा के वरदानों और मसीह की देह में सदस्यता के कार्यों (जैसे—नेतृत्व, शिक्षा, प्रबंध आदि) के विषय में समझाने के बाद, प्रेरित पौलुस हमें इन वरदानों की लालसा करने के लिए उत्साहित करते हैं, परन्तु यह भी कहते हैं कि वे हमें "और भी उत्तम मार्ग" दिखाना चाहते हैं, अर्थात् एक ऐसा मार्ग जो और भी श्रेष्ठ और अत्यन्त उत्तम है। यहाँ यह संकेत दिया गया है कि लोगों की सेवा करने और मसीह की देह की सेवा करने का एक ऐसा मार्ग है जो पवित्र आत्मा के वरदानों और सदस्यता के कार्यों के प्रयोग से भी उत्तम है। वह मार्ग है—लोगों के प्रति परमेश्वर-स्वभाव वाले प्रेम में चलना।

1 कुरिन्थियों 13 के पहले भाग में पौलुस स्पष्ट करते हैं कि यदि हम पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रयोग करें, सदस्यता के कार्यों को निभाएँ, और यहाँ तक कि महान दान-पुण्य के कार्य करें, यहाँ तक कि अपना शरीर जलाए जाने के लिए भी दे दें, परन्तु यदि यह सब परमेश्वर-स्वभाव वाले प्रेम से प्रेरित और संचालित न हो—तो यह सब व्यर्थ है, कुछ भी नहीं है, और कोई लाभ नहीं पहुँचाता। यह दिखाता है कि सेवा और सेवकाई करते समय प्रेम में बने रहना कितना आवश्यक है।

हम जो कुछ भी करें, वह परमेश्वर-स्वभाव वाले प्रेम के द्वारा संचालित, निर्देशित और प्रेरित होना चाहिए। लोगों के लिए प्रेम के कारण और प्रेम से प्रेरित होकर कार्य करें। जैसा कि पौलुस वचन 4-8 में बताते हैं, यदि हम अधीर हैं, निर्दयी हैं, ईर्ष्यालु हैं, घमण्डी हैं, अभिमानी हैं, अशिष्ट व्यवहार करते हैं, स्वार्थी हैं, आत्म-प्रचार करने वाले हैं, आत्म-केंद्रित हैं, चिड़चिड़े हैं, क्रोधित होते हैं, बुरे विचार या बुरी मंशा रखते हैं, अधर्म या असत्य को बढ़ावा देते हैं—तो हम प्रेम के द्वारा संचालित, निर्देशित और प्रेरित नहीं हो रहे हैं। अनुचित उद्देश्य के साथ पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रयोग कुछ भी नहीं है, वह खोखला है और कोई लाभ नहीं पहुँचाता।

जिस कारण प्रेम पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रयोग, सेवकाई के कार्यों, दान-पुण्य के कार्यों तथा विश्वास और आशा से भी श्रेष्ठ है, वह यह है कि प्रेम स्थायी है। एक समय आएगा जब केवल प्रेम ही कार्य में रहेगा—बाकी सब समाप्त हो जाएँगे, अर्थात् उनका प्रयोग नहीं रहेगा। [टिप्पणी: वचन 8 में, भविष्यवाणियों ("भविष्यवाणियाँ... मिट जाएँगी") और ज्ञान ("ज्ञान... जाता रहेगा") के संदर्भ में, वही यूनानी शब्द *"कटार्गेओ" (katargeoo)* प्रयोग किया गया है, जिसका अनुवाद "मिट जाएँगी" और "जाता रहेगा" किया गया है। इसका अर्थ यह है कि ये वरदान अब प्रयोग में नहीं रहेंगे, निष्क्रिय हो जाएँगे।]

इसका यह अर्थ नहीं है कि हमें पवित्र आत्मा के वरदानों या अपनी सदस्यता के कार्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जब हम अपनी प्राथमिकता को सही रखते हुए प्रेम में चलते हैं, तब हम पवित्र आत्मा के वरदानों और सदस्यता के कार्यों के प्रयोग का अनुसरण करते हैं, जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:1 में बात को संक्षेप में कहते हैं—*"प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।"*

याद रखें, विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों 5:6)। प्रेम के बिना विश्वास टूट जाता है। हम विश्वास को प्रयोग करने की विधियाँ तो अपना सकते हैं, परन्तु जहाँ प्रेम नहीं होता वहाँ विश्वास फल उत्पन्न नहीं करता। लोगों के लिए सच्चे और वास्तविक प्रेम से भरा हुआ हृदय बनाए रखें। पवित्र आत्मा ही वह हैं जो हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम उंडेलते हैं (रोमियों 5:5)। इसलिए उनके अधीन रहें। जिन लोगों की आप सेवा करते हैं, उनके लिए मसीह का प्रेम आपको प्रेरित करे, उत्साहित करे और कार्य में आगे बढ़ाए (2 कुरिन्थियों 5:14)।

परमेश्वर का प्रेम ही पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रयोग को प्रेरित, मार्गदर्शित और नियंत्रित करे, ताकि इससे लोगों का सच्चा निर्माण हो और यीशु मसीह की महिमा हो।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 10 नवम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 12 और 13

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 12 और 13*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. पवित्र आत्मा के वरदान एक टूल-बॉक्स के समान हैं, जो सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक विश्वासी के पास सदस्यता के वरदानों का अपना एक विशेष मिश्रण होता है। पवित्र आत्मा के वरदानों और सदस्यता के वरदानों का प्रयोग करके, विश्वासी मसीह की देह में अपने कार्य (FUNCTION) को पूरा कर पाते हैं। (A) इस समय आप मसीह की देह में अपना कौन-सा कार्य देखते हैं? (B) कौन-से सदस्यता के वरदान आप में स्पष्ट दिखाई देते हैं, जो आपके कार्य को पूरा करने में सहायता करते हैं?

2. इस पर चर्चा करें कि प्रेम में रहते हुए पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रयोग करना क्यों आवश्यक है?

3. क्या प्रेरित पौलुस यह सिखा रहे हैं कि हम प्रेम में चलने और पवित्र आत्मा के वरदानों में से किसी एक को चुन सकते हैं, या क्या एक विश्वासी को दोनों रखना चाहिए—प्रेम में चलना भी और आत्मिक वरदानों की लालसा / इच्छा भी? यदि हाँ, तो हम दोनों पर समान बल कैसे दें?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:

चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org